FEBRUARY' 18

03 Day 034-331 Wk-05
SATURDAY

बी०ए० II हिन्दी आनर्स

हिन्दी साहित्य के आदिकाल के नामकरण पर विचार
डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

हिन्दी साहित्य का आदिकाल अनेक मत-मतान्तरों से ग्रस्त रहा है चाहे हिन्दी साहित्य के इतिहास के आरंभिक बिन्दु के निर्धारण का प्रश्न हो या उसके नामकरण का - इसमें मतैक्य का अभाव साफ-साफ देखा जा सकता है।

सर्वप्रथम मिश्र बंधुओं ने इस काल को आदिकाल का नाम दिया इसके पीछे उनका तर्क था कि यह हिन्दी साहित्य का आरंभिक काल है इसलिए इसे आदिकाल कहा जाना समीचीन है। इसके बाद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' नामक ग्रंथ में इस काल को वीरगाथा काल का नाम दिया इसके पीछे आचार्य का तर्क था कि जैन एवं नाथ साहित्य के धार्मिक ग्रंथों को यदि किनारे कर दिया जाए तो कुल बारह पुस्तकें ऐसी हैं जो उस काल में उपलब्ध होती हैं—

1. विजयपाल रासो
2. हम्मीर रासो
3. कीर्तिलता
4. कीर्ति पताका
5. खुमान रासो
6. बीसलदेव रासो
7. पृथ्वीराज रासो
8. जयचन्द प्रकाश
9. जयमयंक जस-चन्द्रिका
10. परमाल रासो
11. अमीर खुसरो की पहेलियां
12. विद्यापति पदावली

आ० शुक्ल की दृष्टि में उस काल में राजाश्रय में पलने वाले कवि अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में काव्य रचा करते थे जिसके रूप में उन्हें

notes
Phone
email
website